नामांक			Roll No.			

No. of Questions — 25

No. of Printed Pages — 7

VU—38–1—Hindi Sah. I

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2010

वैकल्पिक वर्ग I (OPTIONAL GROUP I — HUMANITIES)

हिन्दी साहित्यम् — प्रथम पत्र

(HINDI SAHITYAM — First Paper)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 60

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्नपत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें ।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं । प्रश्न संख्या **23**, **24** एवं **25** में आन्तरिक विकल्प हैं ।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।
4. जिस प्रश्न के एक से अधिक समान अंकवाले भाग हैं, उन सभी भागों का हल एक साथ सतत् लिखें ।
5. प्रश्न क्रमांक **1** के चार भाग (i, ii, iii तथा iv) हैं । प्रत्येक भाग के उत्तर के चार विकल्प (**अ, ब, स** एवं **द**) हैं । सही विकल्प का उत्तराक्षर उत्तर-पुस्तिका में निम्नानुसार तालिका बनाकर लिखें :

प्रश्न क्रमांक	सही उत्तर का क्रमाक्षर
1. (i)	
1. (ii)	
1. (iii)	
1. (iv)	

1. (i) डॉ० रामकुमार वर्मा की प्रथम कविता का शीर्षक है

(अ) देश-सेवा (ब) जन-सेवा

(स) राष्ट्र-सेवा (द) मानव-सेवा । $\frac{1}{2}$

(ii) शिव शम्भु शर्मा ने निर्दोष देशभक्तों के हाथों में बंधी हथकड़ियों को कहा है

(अ) पवित्र आभूषण (ब) हीरक आभूषण

(स) हेममय आभूषण (द) रत्नजड़ित आभूषण । $\frac{1}{2}$

(iii) तुलसीदास की जन्मभूमि का नया नाम पड़ा

(अ) मथुरा (ब) काशी

(स) तिवारीपुर (द) राजापुर । $\frac{1}{2}$

(iv) अध्यापक लल्लूलाल की रचना है

(अ) रानी केतकी की कहानी (ब) प्रेम सागर

(स) नासिकेतोपाख्यान (द) उदयभान चरित । $\frac{1}{2}$

2. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रावृत्त देश के किस क्षेत्र से सम्बन्धित है ?

(उत्तर सीमा लगभग 30 शब्द) 1

3. 'ममता का विष' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सुशील को कौन स्वस्थ नहीं होने दे रहा था और क्यों ? (उत्तर सीमा लगभग 30 शब्द) 1

4. तुलसीदास को किस षड्यन्त्र में जेल जाना पड़ा ?

(उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द) $1\frac{1}{2}$

5. 19 वीं शताब्दी में हिन्दी के विकास में कौन-कौन से सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों का योगदान रहा ? (उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द) $1\frac{1}{2}$

6. 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया' निबंध के संदेश को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

7. 'गर्मियों में पहाड़ पर' लेख में किन पहाड़ों पर जाना उचित बताया गया है ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

8. 'सभ्य वेश में' आत्मकथा अंश से आप क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

9. 'मेले बीते' निबंध के आधार पर मानव जीवन में मेलों के महत्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

10. रत्नावली के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएँ लिखिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

11. तुलसीदास के पालन-पोषण एवं शिक्षा में किन-किन का योगदान रहा ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

12. भारतेन्दुयुगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

13. 'तुम कभी तारा न बनना' महादेवी वर्मा ने अपनी माता को यह क्यों कहा ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

14. रामचरितमानस को उस समय की जनभाषा में प्रस्तुत करने के पीछे तुलसीदास का क्या विचार था ? (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

15. तुलसीदास ने जनता को जगाने हेतु क्या प्रयास किये ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

16. तुलसीदास ने रत्नावली को काशी से वापस भेज दिया । इसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए । (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

17. प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

18. रेखाचित्र, संस्मरण एवं रिपोर्ताज विधाओं का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

19. हिन्दी भाषा के विकास में लल्लूलाल एवं सदल मिश्र के योगदान का उल्लेख कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

20. हिन्दी शब्द भण्डार की व्यापकता पर प्रकाश डालिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

21. हिन्दी कहानी के विकास के विभिन्न सोपानों का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 150 शब्द) 4

22. 'आत्म-विश्लेषण' निबंध के आधार पर बाबू गुलाबराय के व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । (उत्तर सीमा लगभग 150 शब्द) 4

23. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 4

''संसार से तटस्थ रहकर शान्ति सुख पूर्वक लोक-व्यवहार संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्व हमारे धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुसकर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक सौन्दर्य की ज्योति जगानेवालों का है । हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गये हैं । अपने जीवन द्वारा कर्म-सौन्दर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गये हैं ।

कर्म-सौन्दर्य के योग से उनके व्यक्तित्व में इतना माधुर्य आ गया है कि हमारा हृदय आप से आप उनकी ओर खिंचा पड़ता है ।''

अथवा

''कविता से दुनिया में आज तक बहुत बड़े-बड़े काम हुए हैं । अच्छी कविता सुनकर कवितागत रस के अनुसार दुःख, शोक, क्रोध, करुणा, जोश आदि के भाव पैदा हुए बिना नहीं रहते और जैसा भाव मन में पैदा होता है, कार्यरूप में फल वैसा ही होता है । हम लोगों में पुराने जमाने के भाट चारण आदि अपनी कविता ही की बदौलत वीरों में वीरता का संचार कर देते थे । पुराणादिक में कारुणिक प्रसंगों का वर्णन सुनने और उत्तर रामचरित आदि दृश्य काव्यों का अभिनय देखने में जो अश्रुपात होने लगता है वह क्या है ? वह अच्छी कविता का प्रभाव है ।''

24. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 4

''जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है । उसकी विशाल आत्मा अपने देश-बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है पर उसके रूदन में भी व्यापकता होती है । वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है । 'टाम काका की कुटिया' गुलामी की प्रथा से व्यथित ह्दय की रचना है; पर आज उस प्रथा के उठ जाने पर भी उसमें वह व्यापकता है कि हम लोग भी उसे पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं ।''

अथवा

''भारत का मनुष्य बल उसकी समूची-सामर्थ्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है । वह भारत की एक प्रमुख शक्ति है । अगर हम किसी अकुशल भारतीय को प्रशिक्षित करके कुशल बना सकते हैं और अगर हम किसी कुशल भारतीय की कुशलता में वृद्धि कर सकते हैं और अगर हम किसी पढ़े-लिखे भारतीय के लिए चुनौतीपूर्ण माहौल बनाने में मददगार हो सकते हैं और कृषि, उद्योग और सेवा के क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाशीलता उनके नए रास्तों को बना सकते हैं, तो ये सब भारतीय न सिर्फ लक्ष्यों तक पहुँचने में कामयाब हो सकेंगे, वरन उनके पार जाकर भी दिखा सकेंगे ।''

25. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 3

''देशकाल के अनुरूप ही धर्म-बोध ढलता है । कबीर साहब ने जिस समय निर्गुण राम का प्रचार किया उस समय कैसा घोर अत्याचार हो रहा था । अनास्था के ऐसे गहन शून्य-भरे भारत रूपी महल के खण्डहर में कबीरदास यदि निर्गुनियाँ राम का दिया न बारते तो आज उसमें भूत ही भूत समा चुके होते ।''

अथवा

''लेकिन सौन्दर्य बोध की यह सारी प्रक्रिया जब अपनी तह में बैठकर अपनी पूर्णता पाने का प्रयत्न करने लगी तो रोष से फूलता हुआ स्वाभिमान उसके आड़े आया । सारा सद्भाव होते हुए भी उन्हें अपनी पत्नी का अन्याय पक्ष की ओर जाना अच्छा नहीं लगा था । उनका न्याय-बोध उनकी सौन्दर्य-रीझ के बावजूद राजी नहीं हो पाता था । वे अपनी रीझ के कारण कुछ-कुछ शांत तो हुए किन्तु न्याय से सतेज भी बने रहे ।''